प्रधानमंत्री जी द्वारा भारतीय महिला प्रेस समूह की 10वीं वर्षगांठ के अवसर पर भाषण

5 अक्तूबर, 2004
नई दिल्ली

आज आपके सामने उपस्थित होकर मुझे एक घटना याद आ रही है। एक बार, पंडित जवाहर लाल नेहरू का परिचय महान कलाकार सुश्री सुब्बुलक्ष्मी से कराया गया और उन्होंने कहा ''मैं क्या हूँ -- आप, भावनाओं की मल्लिका के सामने महज एक प्रधानमंत्री''। और मैं आप जैसे प्रतिभावान और सृजनशील लोगों के समूह के समक्ष खड़ा हूँ -- आज एक प्रधानमंत्री के रूप में मुझे प्रेस समूह की दसवीं वर्षगांठ के अवसर पर संबोधित करने का सम्मान प्रदान करने के लिए मैं आप लोगों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि ऐसी अनेक वर्षगांठें मनाई जाएगी जैसा कि उर्दू के एक कवि ने कहा है'', **'तुम जिन्दा रहो हजार वर्ष, हर वर्ष के दिन हों पचास हजार'** और मेरी यही इच्छा और प्रार्थना है कि आपका संगठन दिन-प्रतिदिन सुदृढ़ हो और प्रगति करे तथा स्वतंत्रता, सृजनशीलता और साहस के साथ ऐसे कार्यों में लगा रहे जिन्हें आपके सदस्यगण अंजाम देते हैं। मुझे इस दसवीं वर्षगांठ के अवसर पर आपके साथ सम्मिलित होकर प्रसन्नता हो रही है। पत्रकारिता के क्षेत्र में उत्कृष्टता से परिपूर्ण एक और दशक के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं आपके साथ हैं।

यह एक दिलचस्प ऐतिहासिक तथ्य है कि भारतीय महिला प्रेस समूह की स्थापना नब्बे के दशक के शुरू में भारतीय मीडिया में आये महत्वपूर्ण बदलाव के समय हुई है। इसलिए आपकी संस्था की यह दसवीं वर्षगांठ हमारी मीडिया द्वारा पिछले दशक के दौरान की गई यात्रा को मुड़कर देखने का एक उपयोगी पड़ाव साबित हो रहा है। मुझे विश्वास है कि एक व्यापक परिवर्तन हुआ है जिसकी नब्बे के दशक के प्रारंभ से ही भारतीय सामाजिक पृष्ठभूमि पर प्रधानता रही है और मीडिया ने इस प्रक्रिया को दर्शाने का कार्य किया है क्योंकि यह उन महत्वपूर्ण परिवर्तनों से प्रभावित होता रहा है। तथापि, ऐसा प्रतीत होता है कि हमारी मीडिया के क्रमिक विकास, जिसे ''मीडिया के सुनहरे दिन'' कहा जा सकता है, का पर्याप्त रूप से प्रलेखन नहीं हुआ है। मुझे विश्वास है कि आगामी वर्षों में आपको इस पर ध्यान देने के तरीके अवश्य ढूंढने होंगे।

और इस प्रकार पिछले दशक और उससे पूर्व के वर्षों के दौरान, चूंकि तकनीकी परिवर्तन का हम लोगों पर तीव्र प्रभाव पड़ा है इसलिए एक अधिक प्रतिस्पर्धी वातावरण के कारण प्रौद्योगिक रूप से एक नए तथा ज्यादा लोकतांत्रिक मीडिया का तेजी से प्रादुर्भाव हुआ है। प्रौद्योगिकी परिवर्तन और लोकतांत्रिकरण दोनों ही एक दूसरे को सुदृढ़ करने वाली प्रक्रिया है। इसलिए मैं समझता हूँ कि इंटरनेट, कम लागत पर प्रकाशन और सस्ती दर पर संपादन तथा रिकार्डिंग की सुविधाओं के साथ-साथ भारत में आजकल उपलब्ध प्रिंट तथा दृश्य मीडिया की अनेक किस्में नब्बे के दशक के शुरू में किसी के लिए भी कल्पनातीत रही होंगी।

इस संदर्भ में, मीडिया में महिलाओं की अधिकाधिक रूचि और भागीदारी के कारण आपके संगठन की स्थापना हुई है जो मीडिया के व्यापक आधार का प्रतीक है। यह प्रक्रिया हम लोगों द्वारा देखे जाने वाले टेलिविजन चैनलों पर तथा प्रत्येक सुबह पढ़े जाने वाले समाचार पत्रों में स्पष्ट रूप से देखी जा रही है। यह एक सच्चाई है कि इस कमरे में उपस्थित आप लोगों में से कई प्रमुख पदों पर आसीन हैं और वास्तव में आप समाज में अधिक प्रभाव पैदा करने का प्रयास कर रहे हैं। मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता हो रही है कि आज ऐसा कोई नहीं है जो यह तर्क दे सके कि यह ''राजनैतिक सुधार'' के कारण हुआ हैं। बल्कि अब सभी मानते हैं कि आप लोगों ने इन पदों को योग्यता के आधार पर और लगातार कड़ी मेहनत करके पाया है।

तो भी, समय के साथ-साथ स्त्री-पुरुष के बीच भेदभाव के लगातार कम होने के अनेक उदाहरणों के बावजूद, मैं समझता हूँ कि अभी हमें सत्यतापूर्वक यह कहने से पहले काफी लम्बी दूरी तय करनी होगी कि ''महिलाएं काँच की सीमा'' को सफलतापूर्वक तोड़ कर बाहर आ गई हैं।

पद तथा प्रतिष्ठा के प्रश्न से भी बढ़कर, मैं यह कहना चाहूँगा कि हमारे मीडिया को अभी भी वास्तव में स्त्री-पुरुष के बीच समानता को सुनिश्चित करने के लिए कुछ और बाधाएं पार करनी होंगी। इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए एक अनुकूल, सुरक्षित और न्यायसंगत वातावरण बनाने की दृष्टि से तथा मीडिया में चित्रित की गई महिलाओं की छवि को ध्यान में रखते हुए और अधिक प्रयास करने की जरूरत है। इसमें मैं यह भी जोड़ना चाहूँगा कि महिलाओं के विचारों और सुझावों को प्रतिनिधित्व देने की पर्याप्त गुंजाइश हैं और संतुलित तथा गैर-परंपरागत चित्रण में महिलाओं द्वारा सामना की जा रही समस्याओं का समाधान करना मीडिया के क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं के नीतिगत उद्देश्यों में से एक है, जैसा कि महिलाओं के चौथे विश्व सम्मेलन द्वारा पता लगाया गया है। इससे लिंग-भेद के आधार पर पूर्वाग्रह से रहित एक स्वच्छ तथा सुन्दर समाज का निर्माण करने का एक बड़ा सामाजिक कार्य भी पूरा होता है। मुझे विश्वास है कि आपका संगठन इस बात की निगरानी कर रहा है कि हमारा मीडिया इन महत्वपूर्ण उद्देश्यों पर कितनी अच्छी तरह से ध्यान दे रहा है।

चूंकि अंतिम लक्ष्य हमारे देश में एक सुव्यवस्थित समाज का निर्माण करना है, इसलिए यह स्वयं इस बात का साक्षी है कि इस प्रक्रिया में सरकार की भी एक बृहत्तर भूमिका है। सरकार की भूमिका यह सुनिश्चित करना है कि महिलाएं रोजगार के क्षेत्र में समानता के साथ प्रतिस्पर्धा करने की मौलिक क्षमता से सज्जित हों तथा महिलाओं के अपमानजनक चित्रण को रोकने के नियम सख्ती से लागू हों। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि हमारी सरकार इन मूलभूत उद्देश्यों को पूरा करने के प्रति वचनबद्ध है। हम आपके संगठन जैसी गैर-सरकारी एजेन्सियों तथा संगठनों की सहायता से ईमानदारी तथा सच्चाई के साथ यह सुनिश्चित करने का काम करेंगे कि हम देश में और अधिक न्याय संगत तथा लिंग निरपेक्ष समाज का निर्माण कर सकें।

हालॉकि सरकार को इस दिशा में एक ठोस भूमिका निभानी होगी। फिर भी, मैं समझता हूँ कि इस बात में शायद ही संदेह है कि लोकतांत्रिक ढांचे में सरकार को मूल्यों को संचालित करने के अधिकार को अपने तक ही नहीं रखना चाहिए। इन मूल्यों को सामाजिक तथा राजनैतिक शिक्षा के साथ सर्व-सम्मति से तैयार किया जाना चाहिए। समाज पर दबाव डालने वाले समूहों तथा प्रतिनिधि संगठनों के रूप में इस प्रक्रिया को बढ़ावा दिया जाना चाहिए जिसमें स्त्री-पुरुष के साथ बराबर का बर्ताव किया जाए। इसलिए आपके संगठन जैसी संस्थाएं इस ढंग से लोक मत तैयार करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं जिससे सरकार को वास्तव में ज्ञान-सम्पन्न नीतियों को जारी रखने में सहायता मिलेगी।

चूंकि आपका संगठन मीडिया के क्षेत्र में महिलाओं की संस्था है, इसलिए मुझे आशा है कि आप लोग अपने को केवल लिंग भेद से संबंधित मुद्दों, हालांकि ये बेहद महत्वपूर्ण हैं, तक ही सीमित नहीं रखेंगी। मैं आप लोगों से यह आग्रह करूंगा कि आप, आज भारत में मीडिया के समक्ष आ रहे बड़े सामाजिक मुद्दों की ओर भी ध्यान दें। बृहद राष्ट्रीय तथा सामाजिक लक्ष्यों के प्रति वचनबद्धता के प्रश्न के साथ-साथ व्यावसायिकता, वास्तविकता तथा रिपोर्टिंग व कमेंट्री में संतुलन के प्रश्नों पर भी गंभीरता से ध्यान देने की जरूरत है। मैं यह सुझाव भी देना चाहूँगा कि आपके संगठन को इस बात की निगरानी करने की आवश्यकता है कि हमारा प्रेस अपने दिन-प्रति-दिन की रिपोर्टिंग में कैसे संतुलन अपनाए। मीडिया, जो कि एक बड़ी राष्ट्रीय संस्था है, को प्रेस की स्वतंत्रता के माध्यम से मिले अधिकारों और ईमानदारी तथा विषय-निष्ठता, व्यावसायिक सत्य-निष्ठा और उत्कृष्टता के अनुसरण के सिद्धांतों में अन्तर्निहित कर्तव्यों का भी अनुवीक्षण करना चाहिए।

मुझे इस बात में तनिक भी संदेह नहीं है कि मीडिया के सभी क्षेत्रों में खुली प्रतिस्पर्धा को अनुमति देकर मीडिया में और अधिक व्यावसायिकता लाई की जा सकती है। तथापि, हमें यह सुनिश्चित करने की जरूरत है कि मीडिया के क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा की स्वतंत्रता का उचित ढांचा मौजूद होना चाहिए जिससे यह सभी लोगों के लिए लाभप्रद हो सके।। इसलिए सूचना-क्रांति के परिणामस्वरूप आए परिवर्तनों के सन्दर्भ में तथा भारतीय अर्थव्यवस्था के खुलेपन की चल रहीं प्रक्रिया के आलोक में हमारी मीडिया की नीति की समीक्षा करना आवश्यक है। जैसा कि आप जानते हैं, मीडिया संबंधी नीति पर सलाह देने के लिए हमने हाल ही में मंत्रियों के एक समूह का गठन किया है ताकि यह निष्पक्ष तथा संतुलित नीति तैयार करने के तरीकों के बारे में सरकार को सलाह दे सके। सरकार आपके निकाय की तरह की अन्य प्रतिनिधि निकायों के साथ मीडिया में निवेश संबंधी नीति पर विचार-विमर्श करने की संभावना का स्वागत करेगी।

मुझे विश्वास है कि आने वाले वर्षों में भारत के लिए उत्साहवर्धक समय होगा क्योंकि हमने देश की स्वतंत्रता के समय अपने लोगों से किए गए अनेक वादों को पूरा करने का कार्य प्रारंभ किया है। हालांकि यह सच है कि पिछले वर्षों में हमने अपनी अपार विकास क्षमता का पूरा उपयोग नहीं किया है, लेकिन अब मुझे विश्वास है कि हम एक व्यक्ति के रूप में और एक महान राष्ट्र के रूप में अपनी क्षमता का लाभ उठाने में इतनी बेहतर स्थिति में कभी नहीं रहे। इस समय, जब हम लोग तेजी से विकसित हो रही अर्थ-व्यवस्था के आधार पर एक आधुनिक, प्रगतिशील तथा गतिशील समाज का निर्माण करना

चाहते हैं, तो मैं यह मानता हूँ कि यह आपके लिए इस व्यवसाय में आने का सही समय है। इस प्रक्रिया को दिशा प्रदान करने में मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण है और मैं यह कहना चाहूँगा कि आपके द्वारा रिपोर्टिंग तथा समालोचना के माध्यम से इसे मार्गदर्शन देने में भी आपकी भूमिका महत्वपूर्ण है। हालांकि राजनीतिज्ञ इस दूसरी बात में विशेष रूचि नहीं लेते हैं और चूंकि, इस पहली बात के बगैर हमारा काम नहीं चल सकता इसलिए हम उम्मीद करते हैं कि सरकार तथा मीडिया के बीच लगातार संवाद चलता रहे जो एक स्वस्थ लोकतांत्रिक समाज की विशेषता है।

इसलिए मैं आप सभी को आपकी व्यावसायिक सफलता और आपके पसंदीदा व्यवसाय में आपकी प्रगति की कामना करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूँ। मैं यह कामना भी करता हूँ कि आपका संगठन भारतीय मीडिया में महिलाओं के हितों के लिए अनेक दशकों तक सेवा करता रहे।

******